

हिकमत-ए-इलाही

(ईशावास्योपनिषद् की फ़ारसी व्याख्या, हिन्दी-उर्दू
अनुवाद सह)

HIKMAT-E-ILAHI

(Persian commentary of Īsāvāsyopaniṣad with Hindi-Urdu
Translations)

डॉ० फ़रज़ाना आज़म लोत्फ़ी
डॉ० राजेश सरकार

Dr. Farzaneh Azam Lotfi
Dr. Rajesh Sarkar



London Academy of Iranian Studies

Copyright © 2020 by London Academy of Iranian Studies Press.
All rights reserved. This book or any portion thereof may not be
reproduced or used in any manner whatsoever without the express
written permission of the publisher except in the case of brief
quotations in articles and reviews.

For information: philosophy@iranianstudies.org
www.iranianstudies.org

First edition: 2020
Published by London Academy of Iranian Studies Press

Written by: Farzaneh Azam Lotfi, Dr. Rajesh Sarkar

HIKMAT-E-ILAHİ

**(Persian commentary of Īśāvāsyaopaniṣad
with Hindi-Urdu Translations)**

Cover and Design by Seyed Mohammad Ali Alavi

Includes bibliographical references and index.

ISBN 978-1-909538-40-5



London Academy of Iranian Studies



Prof. Shrikishore Mishra

M.A. Ph.D. Acharya

Professor

Ex. Head Deptt of Sanskrit
Faculty of Arts Banaras Hindu

University

Varanasi.India.221005

Foreward

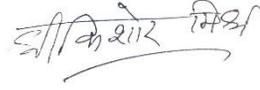
The very first of humanity is to avail a physical and mental healthy life. Indian tradition maintains that by possessing a strong and prosperous inner health one can achieve the ultimate goal of life i.e. Salvation. The Upaniṣad treatises teach the essence of this doctrine in an impressive style. It is in compact form of dialogue and directives. Under the flow of philosophical discourses, a serious stream of social customs and individual conduct is available in Upaniṣadic literature, The Teachings of ethical values and logical notes of Upaniṣads are very popular and useful in human life, The Upaniṣads are the main source of the metaphysics established in the philosophy of Vedānta tradition. The Concept

of Māyā, Avidyā, Acit and significance of Karma, Yoga, Upāsanā and Bhakti are the excellent contributions of Upaniṣads in the field of philosophy. Importance of materialistic nature and simplicity for individual soul are the special teachings of Upaniṣads to humanity. It honors Dharma and Brahma equally. That is why the importance of Satkarm is widely adopted by every branch of Vedanta philosophy.

The Īśāvāsyopaniṣad is a prominent one in the Upaniṣadic Literature and most popular for its logical notes, ethical thought and philosophical doctrines. It holds the first place in the serial of Upaniṣads. It describes the concept of Avidyā and Vidyā and honours the importance of both to achieve the practical and spiritual excellence. Significance of karma and Tyāgam, the two different ideas, is beautifully explained with a united manner in the Īśopaniṣad. This unique feature makes the Īśāvāsyopaniṣad very popular in the field of knowledge. In this way the present work based on the critical analysis of Īśāvāsyopaniṣad is a valuable contribution for the readers of Sanskrit as well as Persian & Urdu

| 5 | HIKMAT-E-ILAH

academians. I congratulate Dr. Rajesh Sarkar and Dr. FarzanehAzamLotfi for this useful presentation before the scholarly world. This book will open new dimensions of research. I hope a wide appreciation of the work among the scholars.



**Prof. Shrikishore
Mishra
Varanasi (India)**



**MM.Prof. Anand Kumar
Srivastava
Professor**

Ex. Head Deptt of Sanskrit
Faculty of Arts Banaras
Hindu University
Varanasi.221005

Foreward

Vedic literature consists of two parts, Mantras & Brahmanas. As Āpastamba says "मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्" which means Mantras and Brahmanas are called Veda. In our tradition Vedas are accepted as the "सर्वज्ञानमयो हि सः" Vedas which deal with knowledge part goes with the name of Upaniṣads. Upaniṣads, Gītā and Bahmasūtra together constitute the VedāntaŚāstra. Generally Āraṇyaka are found at the end part of the exception. It is the part of Śukla Yajurveda Samhitā. There are two recensions of Śukla Yajurveda, the Kāṇva and the Mādhyandina. Thus there are two kinds of

the Upaniṣads of ŚuklaYajurveda. The Kāṇva and the Mādhyandina.

In importance and greatness Īśāvāsyopniṣad ranks first. It is a small Upaniṣad of only eighteen mantras. Among the Upaniṣads of Īśāvāsyopniṣad heads the list. It contains Adhyātmavidyā (spiritual knowledge) in a nutshell.

Although many interpretations and translations have been written on this by Indian spiritual leaders and western scholars and well as.

In this way my dear andintellect disciple Dr. Rajesh Sarkar and Dr. Farzaneh Azam Lotfi (University of Tehran I.R.Iran) translated it into Persian, Hindi and Urdu in these trilingual languages the meaning and diacritical marks.

It is a contribution for Sanskrit, Persian, Urdu & Hindi speakers. I wish you both a bright future.

आनन्द कुमार श्रीवास्तव

15/12/2019

Anand KumarSirvastava
Varanasi (India)

शान्तिपाठ

शान्ति पाठ

Śānti pātha

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Oṃ pūrṇ amadaḥ , pūrṇ amidam, pūrṇ āt
pūrṇ amudacyate,
pūrṇ asya pūrṇ amādāya pūrṇ amevāvaśiṣṭe yate.

Oṃ śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ

उपोद्घात

उपनिषदों के मर्म को जानने से पूर्व इसके शाब्दिक अर्थ को समझना आवश्यक है। उपनिषदों को वेदान्त, ब्रह्मविद्या, आम्नायमस्तक, श्रुत्यन्त इत्यादि अन्यान्य पर्यायों से भी जानते हैं। श्री सदानन्द योगीन्द्र ने अपने प्रसिद्ध प्रकरण ग्रन्थ वेदान्तसार में लिखा है—

“वेदान्तो नामोपनिषत्प्रमाणम्”

अर्थात् वेदान्त उपनिषद् का प्रमाण है। उपनिषदों को वेदान्त इसलिये भी कहा जाता है कि उनका उल्लेख प्रायः वेदों के अन्तिम भाग में प्राप्त होता है। यथा ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का चालोसवां अध्याय और कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय है।

वेदों को चार भागों में विभक्त किया जाता है— संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्।

उपनिषद् का व्युत्पत्ति-परक अर्थ "निकट बैठना" है। इसका भावार्थ "गुरु के निकट ब्रह्मज्ञान की अभिलाषा से बैठना" होता है। चूंकि इन ग्रन्थों में विशेष रूप से ब्रह्मविद्या का उपदेश किया गया है इसलिये उपनिषदों को आत्मज्ञान, ब्रह्मविद्या, अध्यात्मविद्या कहा जा सकता है। उपनिषदों के लिये प्रयुक्त होने वाले आत्मज्ञान, तत्त्वज्ञान, ब्रह्मज्ञान इत्यादि शब्दों के भावार्थ एक ही हैं।

"उप" एवं "नि" उपसर्गपूर्वक सद् धातु में विवप् प्रत्यय से "उपनिषद्" शब्द निर्मित होता है। संस्कृत-व्याकरण के अनुसार "सद्" का अर्थ "बैठना" होता है। उपनिषद् का भावार्थ उस ब्रह्मज्ञान के है जो गुरु के सान्निध्य में प्राप्त किया जाये।

सद् धातु (षदलृविशरण-गत्यवसादनेषु) के तीन अर्थ हैं।

1. विशरण-नाश होना। जिससे संसार की बीजभूत अविद्या का नाश होता है।
2. गति-पान या जानना, जिससे ब्रह्म की प्राप्ति होती है या उसका ज्ञान होता है।
3. अवसादन-शिथिल होना, जिससे मनुष्य के दुःख शिथिल होते हैं। क्षैतिज

| 13 | HIKMAT-E-ILAHİ

अतः भगवत्पाद शंकराचार्य ने अविद्या-नाश, दुःखनिरोध और ब्रह्मप्राप्ति, इन तीनों अर्थों को लेकर उपनिषद् को ब्रह्मविद्या का द्योतक माना है।

मूल उपनिषदों की संख्या के विषय में पर्याप्त मतभेद हैं। मुक्तिक उपनिषद् के अनुसार उपनिषदों की संख्या 108 है। जिसमें ग्यारह सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं इन्हीं पर भगवत्पाद शंकराचार्य ने भाष्य भी किया है:-

1. ईश 2. केन 3. कठ 4. प्रश्न 5. मुण्डक
6. माण्डूक्य 7. ऐतरेय 8. तैत्तिरीय 9. छान्दोग्य
10. बृहदारण्यक 11. श्वेताश्वतर

मुक्तिक उपनिषद् में उपनिषदों की संख्या दस मानी गयी है और उन्हीं के पाठ का उपदेश किया गया है:-

“दशोपनिषद पठ” 1/27

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्डमाण्डूक्यतित्तिरिः।

ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं च दश॥

मुक्तिक उपनिषद् में बताया गयी इस संख्या में श्वेताश्वतर की गणना नहीं की गयी है।

एक सौ आठ उपनिषदों का संकलन निर्णय सागर प्रेस बम्बई से प्रकाशित हुआ जिसका पुनर्मुद्रण चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी से किया गया है। अड़यार लाइब्रेरी मद्रास (चेन्नई) से भी 60 उपनिषद् ब्रह्मयोगी की व्याख्या के साथ पृथक्-पृथक् चार खण्डों में प्रकाशित हुयी है। “उपनिषद्वाक्य-महाकोश” नाम से एक ग्रन्थ गुजराती प्रिंटिंग प्रेस बम्बई (मुम्बई) से प्रकाशित हुयी है, इसके सम्पादक गजानन शम्भु साधले हैं। इसमें 239 उपनिषदों के वचन संग्रहीत हैं। इससे उपनिषदों की विशाल संख्या का अनुमान किया जा सकता है। इस प्रकार उपनिषदों की संख्या दो सौ से भी अधिक है। भारत गणराज्य के राष्ट्रपति रहे, प्रसिद्ध दार्शनिक एवं विद्वान् डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार उपनिषदों की कुल संख्या 108 है, जिनमें ग्यारह मुख्य हैं।

प्रत्येक उपनिषद् का किसी न किसी वेद से सम्बन्ध माना जाता है। यह आवश्यक नहीं कि उस उस उपनिषद् में तत् वेद से सम्बन्धित विषय प्रतिपादित हों। प्रत्येक वेद से सम्बन्धित उपनिषदों के नाम, संख्या और उनके शान्तिपाठ का उल्लेख मुक्तिक उपनिषद् में किया गया है जो निम्नलिखित हैं।

(क) ऋग्वेदीय उपनिषद् –ऐतरेय–उपनिषद्, कौषीतकी इत्यादि दस उपनिषदें ।

(ख) शुक्ल यजुर्वेदीय उपनिषद् ईशावास्योपनिषद्, बृहदारण्यक इत्यादि उन्नीस उपनिषदें ।

(ग) कृष्णयजुर्वेदीय उपनिषद्–कठोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, श्वेताश्वतर, कैवल्य इत्यादि बत्तीस उपनिषदें ।

(घ) सामवेदीय उपनिषद्–केन, छान्दोग्य, मैत्रायणी इत्यादि सोलह उपनिषदें ।

(ङ) अथर्ववेदीय उपनिषद् प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, महानारायण इत्यादि इक्तीस उपनिषदें ।

विषयानुसार इन 108 उपनिषदों को छः भागों में विभक्त किया गया है ।

(क) वेदान्त से सम्बन्धित–24

(ख) योगदर्शन से सम्बन्धित–20

(ग) सांख्यदर्शन से सम्बन्धित–17

(घ) वैष्णव मत से सम्बन्धित–24

(ङ) शैव मत से सम्बन्धित–15

(च) शाक्त एवं अन्य मतों से सम्बन्धित–18

यह विभाजन डॉ० वी. वरदाचार्य ने अपनी पुस्तक “संस्कृत साहित्य का इतिहास” में किया है ।

आकार में लघु, बृहत् इतनी संख्या में उपनिषदों के होने का मुख्य कारण यह रहा कि पत्येक सम्प्रदाय का यह प्रयास रहा है कि उनके विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई न कोई उपनिषद् हा। इसी प्रयास का ही परिणाम रहा कि मुगल सम्राट् अकबर के शासनकाल में इस्लामी सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने के लिये “अल्लोपनिषद् भी लिखो गयो। जो कि सनातन हिन्दू धर्म से सम्बन्धित नहीं है और न ही यह कोई उपनिषद् है। इसी प्रकार बौद्ध दार्शनिक एवं महाकवि अश्वघोष (80CE-150) ने भी अपनी पुस्तक “वज्रसूची” को उपनिषद् का नाम दिया।

उपनिषदों के प्रतिपाद्य विषय:

उपनिषदों में मौलिक रूप से ब्रह्मविद्या का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त उपासना और कर्म के विषय में भी वर्णन प्राप्त होता है। एक ओर ज्ञानमार्ग की उपादेयता वर्णित है तो दूसरी ओर कर्ममार्ग और भक्तिमार्ग की। उपनिषदों के अनुसार उपासना इत्यादि से चित्र के निर्मल होने पर उस परब्रह्म के साक्षात्कार की कामना जाग्रत हो जाती है और साधक इस जगत् को भ्रम समझते हुये नित्य, शुद्ध, बुद्ध कूटस्थ परब्रह्म के साक्षात्कार को उत्सुक हो उठता है। उपनिषदों की शिक्षाओं का सार यह है कि चक्षुगोचर यह जागतिक व्यवस्था भ्रम है और उन सब में एक

| 17 | HIKMAT-E-ILAHİ

परब्रह्म परमात्मा हो भासित हो रहा है। श्वेताश्वतर उपनिषद् (6/14) में भी कहा गया है:—

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं, नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं, तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।

अर्थात् वहाँ न तो सूर्य प्रकाश फैला सकता है न चन्द्रमा और तारागण समुदाय ही और न ये बिजलियाँ ही वहाँ प्रकाशित हो सकती हैं। फिर यह लौकिक अग्नि कैसे प्रकाशित हो सकती है। उसके प्रकाशित होने पर ही ये सब उसके प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। उसके प्रकाश से यह सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित होता है।”

इसी प्रकार उपनिषदों में स्थान—स्थान पर परब्रह्म का वैशिष्ट्य वर्णित है। उस परब्रह्म के गुणों का वर्णन करते हुये श्वेताश्वतर उपनिषद् (3/19) में कहा गया है:—

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यक्षुः स शृणोत्यकर्णः

स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता, तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम्।।

अर्थात् “वह परमात्मा हाथ पैरों से रहित हो कर भी समस्त वस्तुओं को ग्रहण करने वाला तथा वेगपूर्ण सर्वत्र गमन करने वाला है, नेत्रों के बिना ही वह सबकुछ देखता है, और कानों के

बिना सब कुछ सुनता है। वह जानने योग्य सभी वस्तुओं को जानता है परन्तु उसको जानने वाला कोई नहीं है। ज्ञानी पुरुष उसे महान् आदिपुरुष कहते हैं।”

इस प्रकार उपनिषदों में स्थान-स्थान पर उस परब्रह्म का एकत्व वर्णित है। उपनिषदों में स्पष्टतया कहा गया है:-

“एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म (त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषद् 3/3, पैंगलोपनिषद्) 1/1।

वह ब्रह्म एक है और उस में किसी भी प्रकार का द्वित्व नहीं है।

उर्दू के शायर ख्वाजा मीर दर्द के शब्दों में:

“वहदत में तेरे हर्फ ए दुई का न आ सके।”

आईना क्या मजाल तुझे मुँह दिखा सके।।

केन उपनिषद् में कहा गया है कि “जिसको मन से कोई समझ नहीं सकता, जिससे मनुष्य का मन जाना हुआ हो जाता है ऐसा कहते हैं, उसको ही तू ब्रह्म जाना। मन और बुद्धि के द्वारा जानने में आने वाले जिस तत्त्व की लोग उपासना करते हैं, यह ब्रह्म नहीं है:-

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।

| 19 | HIKMAT-E-ILAHİ

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥ (1/5)

उसी ब्रह्म का साक्षात्कार करना ही उपनिषदों की मुख्य शिक्षा है।
केनोपनिषद् (2/5) में कहा भी गया है:—

“इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।”

अर्थात् “यदि इस मनुष्य शरीर में परब्रह्म को जान लिया तब तो बहुत कुशल है और यदि इस शरीर के रहते नहीं जान पाया तो महान् विनाश है।”

उपनिषदों की शिक्षा मानवता एवं समता की है। ईशावास्योपनिषद् (6) में कहा गया है:—

“यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥

अर्थात् “जो मनुष्य सम्पूर्ण प्राणियों को परमात्मा में ही निरन्तर देखता है और सम्पूर्ण प्राणियों में परमात्मा को देखता है, उसके पश्चात् वह किसी से घृणा नहीं करता है।”

उपनिषदों की शिक्षा कर्म पर बल देती है। ईशावास्योपनिषद् (2) में कहा गया है कि मनुष्य को कर्म करते हुये ही सौ वर्ष जीवन जीने की इच्छा करनी चाहिये:—

“कुर्वन्नवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः”

उपनिषदों में ब्रह्मज्ञान की अपेक्षा कर्मकाण्ड को न्यून माना गया है। मुण्डकोपनिषद् (1/2/7) में यज्ञ की संज्ञा भग्न नौका से दी गयी है—

“प्लवा द्येते अदृढा यज्ञरुपा”

उपनिषदों की मुख्य विशेषता यह है कि उनमें विभिन्न विराधाभासों में समन्वय दृष्टिगोचर होता है। यहाँ ज्ञान, कर्म एवं ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग में समन्वय का प्रयास है।

प्रमुख उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय:

1. ईशावास्योपनिषद्—इसे ईशावास्योपनिषद् या ईशोपनिषद् कहा जाता है। यह शुक्ल यजुर्वेद के माध्यन्दिन वाजसनेयी एवं काण्व शाखा दोनों के अन्तिम चालीसवें अध्याय पर उपलब्ध होती है। वाजसनेयी शाखीया में सत्रह एवं काण्वशाखीया में अट्ठारह मन्त्र प्राप्त होते हैं। इसे वाजसनेयोपनिषद् भी कहते हैं। प्रथम मन्त्र “ईशावास्य” के कारण इसे ईशावास्योपनिषद् कहा जाता है। इसी प्रकार प्रथम शब्द “ईश” होने के कारण इसे ईशोपनिषद् कहा जाता है। इस उपनिषद् में ईश्वर की व्यापकता, आत्मतत्त्व का स्वरूप, ज्ञान—कर्मसमुच्चय, सम्भूति— असम्भूतिसमुच्चय, समदर्शी दृष्टि इत्यादि विषय प्रतिपादित हैं।

2. केनापनिषद्— यह उपनिषद् सामवेद की तलवकार शाखा का नौवां अध्याय है। इसे तलवकार—उपनिषद् या जैमिनीयोपनिषद् भी कहा जाता है। इसका प्रारम्भ “केन” (किसके द्वारा) पद से होने के कारण केनोपनिषद् ऐसी संज्ञा हुयी है। यह चार खण्डों में विभक्त है तथा पद्य एवं गद्य दोनों शैली में है।

3. कठोपनिषद्— यह कृष्ण यजुर्वेद की काठक शाखा पर प्राप्त होती है। यह दो अध्यायों में विभक्त हैं दोनों अध्याय तीन—तीन वल्ली में विभक्त किये गये हैं। इस उपनिषद् में ऋषि वाजश्रवा के पुत्र किशोरवय नचिकेता एवं मृत्यु के अधिपति यमराज की पारस्परिक चर्चाओं के द्वारा अध्यात्मविद्या का प्रतिपादन है। इसमें यम नचिकेता को आत्मविद्या का उपदेश करते हैं।

4. प्रश्नोपनिषद्— यह अथर्ववेदीया उपनिषद् है। इस उपनिषद् में ऋषि पिप्पलाद के छः शिष्य उनसे एक एक “प्रश्न” करते हैं। जिनका समाधान ऋषि पिप्पलाद द्वारा किया जाता है। यह उपनिषद् प्रश्न शीर्षक से छः भागों में विभक्त है।

5. मुण्डकोपनिषद्— यह उपनिषद् अथर्ववेद की शौनकीय शाखा से सम्बन्धित है। यह “मुण्डक” नाम से तीन अध्यायों में विभक्त है और प्रत्येक मुण्डक में “दो दो खण्ड हैं। इस उपनिषद् में प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अपन ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को अध्यात्मविद्या का उपदेश किया गया है। यह उपनिषद् गद्यात्मक है, बीच—बीच में मन्त्र (पद्यात्मक) भी हैं।

6. माण्डूक्योपनिषद्— इसका सम्बन्ध अथर्ववेद से है। यह पूर्णतया गद्यात्मक है। आकार दृष्ट्या यह सबसे लघुकाय उपनिषद् है। इस में कुल बारह वाक्य हैं। इसमें ओंकार (ॐ) की विस्तृत व्याख्या की गयी है। इस पर भगवत्पाद शंकराचार्य के दादागुरु गौडपादाचार्य ने "माण्डूक्यकारिका" नामक भाष्य लिखा है।

7. ऐतरेयोपनिषद्— यह ऋग्वेद से सम्बन्ध रखता है, तथा पूर्णरूपेण गद्यात्मक है। इस में कुल तीन अध्याय है। अध्यायों को खण्डों में विभक्त किया गया है। इस उपनिषद् में अध्यात्मविद्या के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। इस में आत्मा के अस्तित्व, सृष्टि प्रक्रिया इत्यादि विषयों पर चर्चा है।

8. तैत्तिरीयोपनिषद्— यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के तैत्तिरीय आरण्यक से सम्बन्धित है। जिस में दस अध्याय हैं उसी का सातवां, आठवां और नौवां अध्याय ही तैत्तिरीयोपनिषद् कहा जाता है। इस उपनिषद् में तीन अध्याय हैं। तीनों अध्यायों के नाम क्रमशः शीक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली और भृगुवल्ली है। वल्ली को अनुवाक में विभक्त किया गया है। तीनों वल्लियों में अनुवाकों की संख्या इस प्रकार हैं।

(क) शीक्षावल्ली— 12 अनुवाक।

(ख) ब्रह्मानन्दवल्ली— 9 अनुवाक।

(ग) भृगुवल्ली— 10 अनुवाक।

इसका "शीक्षावल्ली" नामक अध्याय बहुत प्रसिद्ध है। इसका उपदेश आचार्य द्वारा अन्तेवासी को समावर्तन संस्कार के अवसर पर किया जाता है।

9. छान्दोग्योपनिषद्— इसका सम्बन्ध सामवेद की तलवकार शाखा से है। इस उपनिषद् में कुल आठ अध्याय हैं। प्रथम दो अध्यायों में सामविद्या का उपदेश है। तृतीय में सूर्य की देवमधु के रूप में उपासना का वर्णन है। चतुर्थ में रैक्व का ब्रह्मविद्या विषयक ज्ञान, सत्यकाम एवं जाबालि की कथा, सत्यकाम द्वारा उपकोशल को दिया गया उपदेश इत्यादि विषय वर्णित हैं। **पञ्चम** अध्याय में प्रवहण जाबालि के दार्शनिक सिद्धान्त एवं अश्वपति कैकय क सृष्टि विषयक तत्त्वों का प्रमुखता से विवेचन है। षष्ठ अध्याय में ऋषि आरुणि का दर्शन प्रतिपादित है। सप्तम में देवर्षि नारद एवं सनत्कुमार संवाद तथा अष्टम में इन्द्र एवं विरोचन की कथा है।

10. बृहदारण्यकोपनिषद्— यह आकार में सर्वाधिक बृहत् उपनिषद् है। यह शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण का एक भाग है। "बृहत्" शब्द विशालता का ही वाचक है। इसमें तीन काण्ड एवं प्रत्येक में दो-दो अध्याय हैं। तीनों काण्डों के नाम क्रमशः मधुकाण्ड, याज्ञवल्क्यकाण्ड (मृनिकाण्ड) एवं खिलकाण्ड कहा जाता है।

11. श्वेताश्वतर उपनिषद्— यह कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित है। इस में कुल छः अध्याय हैं। इस प्रकार उपनिषद् में शैव, वेदान्त और सांख्य—दशन का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

ईशावास्योपनिषद् का संक्षिप्त परिचय:

काण्व शाखा का अन्तिम अनुवाक (चालीसवां) ही आज ईशावास्योपनिषद् के नाम से प्रसिद्ध है। यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन—वाजसनेयी एवं काण्व दोनों शाखाओं पर प्राप्त होता है। यह शुक्ल यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय है। वाजसनेयी शाखा में सत्रह और काण्व में अट्ठारह मन्त्र प्राप्त होते हैं। किन्तु माध्यन्दिन—वाजसनेयी शाखा के अन्तिम चालीसवें अध्याय में भी वे ही मन्त्र कुछ पाठभेदों के साथ संगृहीत हैं। किन्तु इन पाठभेदों का सम्बन्ध मन्त्रों के क्रमानुपूर्वी तथा अक्षरानुपूर्वी से ही सम्बन्ध रखते हैं। दोनों ही शाखाओं के अन्तिम अध्याय के मन्त्रों के अर्थ तथा तात्पर्य में किसी भी प्रकार का अन्तर प्रतीत नहीं होता है। आचार्यों ने ईशावास्योपनिषद् के रूप में काण्वसंहिता के ही मन्त्रों की क्रमानुपूर्वी तथा वर्णानुपूर्वी को अपनी व्याख्या का विषय बनाया है, किन्तु माध्यन्दिन शाखा के अन्तिम अध्याय को ईशावास्योपनिषद् के नाम से अभिहित करने में किसी भी प्रकार की आपत्ति इसलिये नहीं होनी चाहिये कि सभी शाखाओं के अन्तिम अध्याय उपनिषद् शब्दाभिधेय हैं।

जिस प्रकार काण्वसंहिता का अन्तिम अनुवाक का प्रारम्भ “ईशावास्य” शब्द से होने के कारण ईशावास्योपनिषद् शब्द से अभिहित किया जाता है, उसी प्रकार माध्यन्दिन शाखा का भी अन्तिम अध्याय “ईशावास्य” शब्द से प्रारम्भ होने के कारण ईशावास्योपनिषद् शब्दाभिधेय हैं। इस उपनिषद् में परमात्मा की सर्वव्यापकता, आत्महन्ता की दुर्दशा, आत्मतत्त्व विवेचन, विद्या-अविद्या, सम्भूति-असम्भूति की उपासना का फलनिरूपण, विद्या-अविज्ञा समुच्चय, असम्भूति-सम्भूति-समुच्चय, प्राणान्त के समय साधक की कामना इत्यादि विषय प्रतिपादित हैं। इस पर विभिन्न आचार्यों के भाष्य प्राप्त होते हैं। जिनके विवरण इस प्रकार हैं:

1. भगवत्पाद शंकराचार्य द्वारा “शाकरभाष्य”
2. उव्वटाचार्य (1050ई0) द्वारा ईशावास्यभाष्य”
3. वेंकटनाथ (वेदान्तदेशिक) (1300ई0) द्वारा ईशावास्य भाष्य।
4. महीधर (1500ई0) द्वारा “ईशावास्यभाष्य”

भगवत्पाद शंकराचार्य के शाकरभाष्य के आधार पर रचित प्रमुख भाष्य—

1. शाकरभाष्य पर आनन्दगिरि (1100ई0) की व्याख्या।
2. शंकरानन्द (1200ई0) की “दीपिका” व्याख्या
3. ब्रह्मानन्द द्वारा “ईशावास्य रहस्य”

4. रामचन्द्र द्वारा "ईशावास्य रहस्य विवृत्ति"
5. आनन्द भट्टोपाध्याय द्वारा "ईशावास्य भाष्य"
6. अनन्ताचार्य द्वारा "ईशावास्य भाष्य"

अंग्रजों में उपलब्ध भाष्य एवं अनुवाद:

1. प्रो० फ्रेडरिक मैक्समूलर द्वारा
2. राजा राम मोहन रॉय द्वारा।
3. प्रो० क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा
4. बी० के० अय्यर द्वारा

उपनिषदों का रचनाकाल:

पारम्परिक आचार्यगण वेद को अनित्य एवं अपौरुषेय अर्थात् जिसकी रचना मनुष्य द्वारा न हुयी हो ऐसा मानते हैं अर्थात् वेद परमात्मा प्रोक्त है जिसका दर्शन ऋषियों ने किया है चूंकि उपनिषद् भी श्रुति है जो सृष्टि के आदि में प्रकट हुयी। किन्तु इतिहासकारों का अपना एक निकष है जिस पर वे किसी ग्रन्थ के रचनाकाल को निर्धारित करते हैं। प्रो० फ्रेडरिक मैक्समूलर ने भाषा व छन्दों के आधार पर उपनिषदों का रचनाकाल 600ई० पू० माना है। विण्टरनिट्स ने 700 या 800 ई० पू० माना था। लुडविग के अनुसार 1000ई० पू० है। उपर्युक्त सभी विद्वानों की मान्यता के अनुसार उपनिषदों का समय आचार्य पाणिनि और

महात्मा बुद्ध से पूर्व था, जिनका समय 550 ई० पू० था। बृहदारण्यकोपनिषद् में दी हुयी आचार्यवंश परम्परा के आधार पर डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल की मान्यता 800ई० पू० से 1100ई० पू० है। गोल्डस्ट्रकर की मान्यता के अनुसार पाणिनि उपनिषदों से अनभिज्ञ थे। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने इनका समय 1680 से 1880 ई० पू० निर्धारित किया है।

उपनिषदों की महत्ता:

उपनिषदों के विचारसमुद्र का जल अतीव गम्भीर है। उपनिषदों में ऐसे-ऐसे उत्कृष्टकोटिक विचार प्रतिपादित किये गये हैं कि उससे समस्त संसार के विचारक प्रभावित हो उठे चाहे व किसी भी धर्म, जाति, सम्प्रदाय के रहे हों। इसका मुख्य कारण यह है कि उपनिषदों में ऐसे सत्य का प्रतिपादन है जो सभी मनुष्यों के अन्तःकरण में पहले से ही सन्निहित हैं। इस सन्दर्भ में कुछ विद्वानों के विचार ध्यातव्य हैं। जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक आर्थर शोपेनहावर (Arthur Schopenhauer) लिखते हैं:

From every sentence deep original and sublime thoughts arise, and whole is pervaded by a high and holy and earnest spirit. In the whole world there is no study, so beneficial and so elevating as that of the

Oupnekhat. It has been the solace of my life, it will be the solace of my death.

वह आगे लिखता है:

In India our religion will now and never strike root. The primitive wisdom of the human race will never be pushed aside by the events of Galilee. On the contrary, Indian wisdom will flow back upon Europe. and produce a through chang in our knowledge and thinking.

स्वामी विवेकानन्द की शिष्या सारा बुल (Sara Bull) अपने एक पत्र में लिखती हैं:

The German school, the English orientalis and our one Emerson Testify the fact that it is literally true that Vedantic thoughts pervade the western thought of today.

आयरिश मूल की भारतीय दार्शनिक स्वतन्त्रता-सेनानी राजनेत्री डॉ० ऐनी बेसेन्ट कहती हैं:

Personally I regard the Upanisads as the highest product of the human mind, the crystallized wisdom of divinely illumined men.

प्रसिद्ध प्राच्यविद्याविशारद एवं संस्कृत के विद्वान् प्रो० एफ० मैक्समूलर (Prof. F. Maxmuller) आर्थर शोपनहावर (Aurther Schopenhauer) का समर्थन करते हुये कहते हैं:

If these words of Schopenhauer required any confirmation I would willingly give it as a result of my life long study.”

Philosophy of Upanisads पुस्तक के लेखक प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् पाल डायसन (Paul Deussen) लिखते हैं:

Philosophical conceptions unequalled in India, or perhaps any where else in the world.

इन उपर्युक्त कथनों से हम उपनिषदों की महत्ता का अनुमान समासेन कर सकते हैं।

उपनिषदों के फ़ारसी-उर्दू अनुवाद का संक्षिप्त इतिहास:

उपनिषदों का सर्वप्रथम अनुवाद फारसी में मुग़ल युवराज दाराशिकोह के प्रयासों से हुआ। सन् 1640 ई० में वह कश्मीर

की यात्रा पर गया जहां उसने उपनिषदों की कीर्ति सुनी। उसने काशी के पण्डितों और संन्यासियों के सहयोग से लगभग पचास उपनिषदों के अनुवाद “सिर्-ए-अकबर” (महारहस्य) के नाम से 1657ई० में किया। इन उपनिषदों का नाम खाजना अत्यन्त दुष्कर था, किन्तु अरबी-फ़ारसी के प्रतिष्ठित विद्वान् मौलवी महेश प्रसाद (पूर्व अध्यक्ष अरबी-फ़ारसी विभाग काशीहिन्दूविश्वविद्यालय) ने लगभग 45 उपनिषदों के नाम खोज निकाले। इस अनुवाद की बहुत सी पाण्डुलिपियां उपलब्ध होती हैं जिनका उल्लेख मौलवी महेश प्रसाद जी ने अपने शोधलेख Unpublished Translation of Upanisads (मोदी स्मारक ग्रन्थ, बम्बई) में किया है। इस अनुवाद को डॉ० ताराचन्द और डॉ० रज़ा जलाली नाईनी ने सम्पादित करके तेहरान (ईरान) से प्रकाशित करवाया।

“सिर्-ए-अकबर” के दो हिन्दी रुपान्तरण मुझे प्राप्त हुये हैं। प्रथम प्रो० सलमा महफूज़ (पूर्व अध्यक्षा, संस्कृतविभाग अलीगढ़-मुस्लिम-विश्वविद्यालय) दूसरा डॉ० हर्षनारायण (दर्शन एवं धर्म विभाग काशीहिन्दूविश्वविद्यालय) द्वारा किया गया। यह अनुवाद भुवन-वाणी ट्रस्ट लखनऊ से प्रकाशित है।

इसी प्रकार उपनिषदों के उर्दू अनुवाद भी एक अच्छी खासी संख्या में हुये हैं, जिनके विवरण इस प्रकार हैं:-

1. दाराशिकोह के फ़ारसी अनुवाद “सिरर-ए-अकबर” के आधार पर “अलख-प्रकाश” नाम से उपनिषदों का अनुवाद हुआ जो सन् 1861 ई० में ज्ञानप्रेस आगरा से प्रकाशित हुआ।
2. “मजमुआ-ए-उपनिषद्” के नाम से प्यारेलाल ने उर्दू अनुवाद किया जो 1900ई० में विद्यासागर प्रेस से प्रकाशित हुआ।
3. उपनिषदों का भाष्य के साथ उर्दू अनुवाद सूरज नारायण मेहर ने किया जो चार खण्डों में हैं।
4. ईशावास्योपनिषद् का उर्दू अनुवाद भागमल सनी ने “पयाम-ए-राहत” के नाम से किया जो इलेक्ट्रिक प्रेस जालन्धर (पंजाब) से 1929 ई० में प्रकाशित हुआ।
5. छान्दोग्योपनिषद् का उर्दू अनुवाद बादा नगीना सिंह बेदी ने मेयार-ए-इल्म-ए-काशफ़ा के नाम से किया जो आनन्द प्रेस लाहौर और इब्राहीम प्रेस लखनऊ से प्रकाशित हुआ।
6. ईश, केन आर कठ का उर्दू अनुवाद प्रसिद्ध आर्यसमाजी संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी महाराज ने किया जो मुफ़ीद आम प्रेस, लाहौर से 1937 ई० प्रकाशित हुआ।

स्वामी जी ने बारह उपनिषदों पर उर्दू में भाष्य लिखा जो “उपनिषद् प्रकाश” के नाम से प्रकाशित हुआ। इसका हिन्दी अनुवाद इसी नाम से स्वामी वेदानन्द तीर्थ (दयानन्द तीर्थ) ने किया जो वानप्रस्थ साधक प्रेस गुजरात से प्रकाशित हुआ।

7. ईशावास्योपनिषद् का एक उर्दू गद्यानुवाद 1930 ई0 में हुआ, जो नाभा पुस्तकालय (पंजाब) में सुरक्षित है।
8. छान्दोग्योपनिषद् का एक अनुवाद सूरज नारायण मेहर ने किया जो 1917ई0 में साधु प्रेस से प्रकाशित हुआ।
9. ईशावास्योपनिषद् का बादा नगीना सिंह बेदी ने अनुवाद किया जो गुलशन इब्राहीम प्रेस लखनऊ से प्रकाशित हुआ।
10. ऋग्वेदीय उपनिषदों का अनुवाद शिवप्रसाद "राहिल" ने किया, जो नाभा पुस्तकालय पंजाब में सुरक्षित है।
11. तैत्तिरीयोपनिषद् (ब्रह्मानन्दवल्ली, भृगुवल्ली) और ईशावास्योपनिषद् का अनुवाद शिव प्रसाद "राहिल" ने किया।
12. ईशावास्योपनिषद् का गद्यानुवाद हबीबुर्हमान शास्त्री ने "आईना-ए-हकीकत" के नाम से किया जो अंजुमने तरक्की-ए-उर्दू हिन्द अलीगढ़ से 1950ई0 में प्रकाशित हुआ।

प्रस्तुत पुस्तक के सन्दर्भ में कुछ बातें

सर्वशक्तिमान् परमकरुणामय ईश्वर की कृपा से यह पुस्तक डॉ० फ़रज़ाना आज़म लोत्फ़ी और मेरे संयुक्त प्रयासों का परिणाम है। यह ईशावास्योपनिषद् की फ़ारसी व्याख्या (हिन्दी-उर्दू अनुवादसह है। इस पुस्तक की भाषा-चतुष्टयी भूमिका (फ़ारसी, हिन्दी एवं उर्दू, अंग्रेज़ी) में उपनिषदों से सम्बन्धित बहुत सी महत्त्वपूर्ण बातें दी गयी हैं। जिसे पढ़ कर फ़ारसी और उर्दू भाषी लोग विशेष रूप से लाभान्वित हो सकते हैं। ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है और अध्यात्मविद्या के सन्दर्भ में कहना ही क्या है। उपर्युक्त सभी बातों का ध्यान रखते हुये इस लघु प्रयास को जनमानस के सम्मुख लाया गया है।

यद्यपि इसके पूर्व भी उपनिषदों, विशेष रूप से ईशावास्योपनिषद् के अनेक उर्दू अनुवाद हो चुके हैं किन्तु सम्प्रति वे सब आउट ऑफ़ प्रिण्ट हैं और उपलब्ध नहीं होते हैं। इसके साथ ही भाषा एवं नदी में एक प्रवाह होता है। हर युग में तत् तत् भाषी अपनी भाषा में किये गये कार्यों में एक विशेष प्रकार की नवीनता चाहते

हैं चूंकि फ़ारसी अनुवाद हुये एक दीर्घ अवधि व्यतीत हो चुकी है। अस्तु एक नवीन फ़ारसी अनुवाद एवं व्याख्या की आवश्यकता प्रतीत हुयी। उर्दू में अनेक अनुवाद उपलब्ध होने पर भी एक सरल, मधुर और युगीन भाषानुरूप अनुवाद की आवश्यकता हुयी। दुर्भाग्य से पूर्व में किये गये उर्दू अनुवादों में से मुझे कोई उपलब्ध न हो सके। यद्यपि डॉ० शेख अब्दुल ग़नी साहब (भोंगीर, हैदराबाद तेलंगाना) की पुस्तक “संस्कृत अदब के उर्दू तराजिम: एक जायज़ा” में श्री हबीबुर्हमान शास्त्री द्वारा किये गये ईशावास्योपनिषद् के उर्दू अनुवाद “आईन-ए-हकीकत” के दो मन्त्र उदाहरण स्वरूप प्राप्त हुये जिसके आधार पर मेरे द्वारा अट्टारह मन्त्रों के अनुवाद पूर्ण किये गये। इस हिन्दी एवं उर्दू अनुवाद में इस विषय का ध्यान रखा गया है कि किसी विशिष्ट दार्शनिक सम्प्रदाय का प्रभाव न हो चाहे वह शांकर वेदान्त हो या रामानुज-वेदान्त अथवा आय-समाज के दृष्टिकोण। इस हेतु उव्वट-महीधर के यजुर्वेद भाष्य का आश्रय लिया गया। अनुवाद के साथ संस्कृत मन्त्रों के रोमन लिप्यन्तरण उच्चारण सौकर्य के लिये दिये गये हैं। उर्दू को देवनागरी लिपि में भी दिया गया है विगत वर्षों में पाठकों का एक वर्ग ऐसा तैयार हुआ है जो उर्दू को देवनागरी लिपि में पढ़ता है। संस्कृत शब्दों के हिन्दी, फ़ारसी और उर्दू अर्थ भी दिये गये हैं, जिससे पाठकवर्ग को सौविध्य हो सके।

अनेक काठिन्य के उपरान्त भी डॉ० फ़रज़ाना आज़म लोत्फ़ी (उर्दू विभाग, भारत अध्ययन, तेहरान विश्वविद्यालय, इस्लामी गणराज्य ईरान) और मेरा यह संयुक्त प्रयास परिणाम को प्राप्त हुआ। इसके लिये सर्वप्रथम मैं जगन्नियन्ता पालनहार परमात्मा का आभार प्रकट करता हूँ। जिसकी इच्छा के बिना संसार में पर्णमात्र भी कम्पित नहीं होता है।

मैं अपने पूज्य गुरु वेदों के मर्मज्ञ प्रो० श्रीकिशोर मिश्र जी (पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, पूर्व सचिव सान्दीपनि वेदविद्या केन्द्र उज्जयिनी) का हृदय से आभार प्रकट करते हुये प्रणामाञ्जलि समर्पित करता हूँ।

मैं अपने मैं अपने पूज्य गुरु महामहोपाध्याय प्रो० आनन्द कुमार श्रीवास्तव (पूर्व अध्यक्ष, संस्कृतविभाग काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय) का हृदय से आभार प्रकट करते हुये प्रणामाञ्जलि समर्पित करता हूँ। मैं अपने गुरु रहे जिन्होंने मुझे आज से लगभग ग्यारह वर्ष पूर्व स्नातक की कक्षा में ईशावास्योपनिषद् अत्यन्त मनोयोग से पढ़ाया था और इसमें मेरी रुचि उत्पन्न की थी ऐसे पूज्य गुरुवर्य स्वर्गीय प्रो० शंकरदयाल द्विवेदी (पूर्व अध्यक्ष, संस्कृतविभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) के चरणाम्बुज में प्रणति निवेदन करता हूँ अब आप सशरीर इस भूतल पर नहीं हैं। मैं सर्वशक्तिमान् परमात्मा से आपके आत्मा की शान्ति की कामना करता हूँ।

सम्मानार्ह माता-पिता के श्रीचरणों में प्रणामाञ्जलि समर्पित करता हूँ, जिनके पालन-पोषण ने मुझे इस योग्य बनाया है।

सम्माननीय गुरुवर्य प्रो० सैयद हसन अब्बास (निदेशक रामपुर रज़ा लाईब्रेरी प्रोफ़ेसर फ़ारसी विभाग-काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय) और सम्माननीय श्री वसीम हैदर हाशिमि जी का आभारी हूँ। आप दोनों पर परमात्मा की कृपा हो। प्रो० वज़ीर हसन (पूर्व अध्यक्ष अरबी विभाग काशीहिन्दूविश्वविद्यालय) का आभारी हूँ। आपसे इस्लाम धर्मीय पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान हुआ। अपने सहयोगियों एवं सहकर्मियों में डॉ० शिल्पा सिंह एवं डॉ० ठाकुर शिवलोचन शाण्डिल्य का हृदय की गहराईयों से आभार प्रकट करता हूँ। आप दोनों से ही मुझे समय समय पर परामर्श एवं प्रोत्साहन प्राप्त होते रहे हैं।

प्रूफ़रीडिंग के लिये पूज्य गुरु डॉ० सुकुमार चट्टोपाध्याय एवं प्रिय मित्र डॉ० अब्दुस्समी (उर्दू विभाग काशीहिन्दूविश्वविद्यालय) का आभारी हूँ। ईश्वर आपको सफलता प्रदान करे। प्रिय मित्र डॉ० कासिम अंसारी एवं डॉ० एहसान हसन (उर्दू विभाग काशीहिन्दूविश्वविद्यालय) का भी हृदय से आभारी हूँ।

इस कार्य को परिणाम तक पहुंचाने में जिनकी सवार्धिक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है ऐसी डॉ० फ़रज़ाना आजम लोत्फ़ी (असि० प्रोफ़० उर्दूविभाग, भारत अध्ययन, तेहरान विश्वविद्यालय

इस्लामी गणराज्य इरान) का धन्यवाद ज्ञापन करना शब्द-सीमा से परे है। आपने इतनी दूर होकर भी इस कार्य को सम्पन्न किया और अपने सत्परामर्शों से मुझे लाभान्वित भी किया।

महाकवि मिर्जा ग़ालिब ने बनारस पर लिखी अपनी प्रसिद्ध मसनवी रचना "चिराग-ए-दैर" में लिखा है:

जु नून त गरबे नफ़ स-ए-खाद त माम अस्त ।
ज काशी बा काशान नीम गाम अस्त ।।

अर्थात् यदि तेरी दीवानगी तीव्र है, तो काशी से काशान (ईरान का नगर) की दूरी आधे कदम के फ़ासले पर है।"

सर्वशक्तिमान् परमकरुणामय परमात्मा का अत्यधिक अनुग्रह रहा कि आप सदृश भगिनी से मेरी भेंट हुयी आपकी पवित्रता, विद्यानुरागिणी प्रवृत्ति, धर्मपरायणता हम सभी के लिये अनुकरणीय है। ईश्वर आप पर अपनी कृपा करे।

इसी क्रम मे मैं प्रसिद्ध इस्लामविद्, तुलनात्मक धर्म-दर्शन के मर्मज्ञ, ईशपरायण प्रो० सैयद सलमान सफ़वी का हृदय से आभारी हूँ कि आपने हमारे कार्य को सम्मान दिया एव आपके प्रयासों से यह कार्य मूर्तरूप ले सका। फ़ारसी का अधोलिखित शेअर आपके व्यक्तित्व पर चरितार्थ होता है:-

ख़ा.ु दा-ए-जहाँ रा हज़ारान सिपास ।
कि गौहर सुपुद'ह बे गौहर शानास ।।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपके हृदय को अहले बैत (पैग़म्बर
मुहम्मद स०अ० के परिवारीजन) के प्रति अपार प्रेम से परिपूरित
कर दे ।

टंकण मुद्रण के लिये शाहिद रज़ा साहब (शोध छात्र MANU
हैदराबाद) एवं डॉ० जाफ़र (लखनऊ) का आभारी हूँ ।

अन्त में इसके मूल्यांकन का दायित्व पाठकों पर छोड़ता हूँ ।

5/जुलाई 2020 ई०
राजेश सरकार
संस्कृतविभाग
कलासकाय
काशीहिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी (उ.प्र)
भारत
sarkar.bhu09@gmail.com
फ़रज़ाने आज़म लुत्फी
भारतीय अध्ययन
सहायक प्रोफेसर उर्दू भाषा और साहित्य, भारतीय अध्ययन तेहरान
विश्वविद्यालय, ईरान
f.azamlotfi@gmail.com